शेख़ फ़रीद – सबद ६३

फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८१

फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि ॥
दरवेसां नो लोड़ीऐ रुखां दी जीरांदि ॥६०॥

सार: सेवा के असली सार को समझने के लिए, हमें प्रकृति को ध्यान से देखना चाहिए। जैसे ही पतझड़ का मौसम आता है पेड़ अपने पत्ते गिराते हैं, यह पत्ते ज़मीन पर गिर, सड़कर मिट्टी में मिल जाते हैं और मिट्टी को उपजाऊ बनाते हैं। यह प्रक्रिया बिना किसी तारीफ़ या पहचान की चाह के, निस्वार्थ भाव से जंगल का पोषण कर जीवन को बढ़ावा देती है। ठीक इसी तरह, सच्ची सेवा के लिए हमें अपने अहंकार और भ्रम को त्यागना होगा ताकि हमारा मन विश्व-कल्याण की भावना के साथ विकसित और उन्नत हो सके।

फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि ॥
फ़रीद कहते हैं कि अपनी अंतरात्मा से भ्रम और संदेह को दूर करने के लिए, उस सर्वव्यापी आंतरिक स्वामी की सेवा करो। यह सेवा को नए रूप में परिभाषित करता है, इसे किसी बाहरी सत्ता को प्रसन्न करने के बजाय, मन को उसकी असुरक्षाओं से मुक्त करने के रूप में प्रस्तुत करता है॥

दरवेसां नो लोड़ीऐ रुखां दी जीरांदि ॥६०॥
पवित्र श्रद्धा के साधकों को वृक्षों जैसा धैर्य और सहनशीलता रखनी चाहिए। यह उस गहरी स्थिरता के गुण की ओर संकेत करता है जो जीवन की चुनौतियों का सामना गरिमा और शक्ति के साथ करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। (६०)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक धैर्य को समझाने हेतु वृक्ष के उदाहरण का उपयोग करते हैं। एक वृक्ष हवा के झोंकों के सामने झुक जाता है और उन्हें आत्मसात कर लेता है,

वह हवा से संघर्ष करने के बजाय अपनी जड़ों से दृढ़ता से जमा रहता है। उसकी असली शक्ति उसकी अनुकूलनशीलता में निहित है जिसके साथ वह अपनी जड़ों से जुड़ा रहता है। इसी तरह, आध्यात्मिक यात्रा के लिए हमें अपने भीतर आंतरिक स्थिरता और संतुलन विकसित करने की आवश्यकता होती है। सच्ची सहनशीलता बाहरी परिस्थितियों को नियंत्रित करने में नहीं बल्कि बदलावों के बीच भी स्वयं को स्थिर और सचेत बनाए रखने में है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com